1.2 हिंदी

(प्रथम भाषा)

भूमिका

भाषा मनुष्य की आवश्यक तथा विशिष्ठ निर्मिति है। भाषा के माध्यम से ही मनुष्य ने विविध क्षेत्रों में अपनी प्रगति की है । भाषा का व्यवहार ज्ञानसंपादन, संप्रेषण, दैनंदिन व्यवहार तथा सरकारी कामकाज आदि विविध स्तरों पर होता है । क्षेत्र के अनुसार भाषिक प्रयोग में कुछ परिवर्तन होते हैं ।

भारत बहुभाषी देश है । यहाँ अनेक प्रांतीय भाषाएँ बोली जाती हैं । वर्तमान युग में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में कार्यरत है । महाराष्ट्र राज्य में कक्षा पाँचवीं से ही हिंदी भाषा का अध्ययन-अध्यापन प्रारंभ होता है । उसमें समय-समय पर परिवर्तन तथा परिवर्धन होता रहता है । हिंदी के परंपरागत तथा नूतन अनुप्रयोगों से परिचित कराने की दृष्टि से प्रस्तुत पाठ्यक्रम की निर्मिति की गई है । इसमें एन. सी. ए. २०१० के मार्गदर्शक तत्वों का आधार लिया गया है ।

भाषा का मुख्य व्यवहार साहित्य के क्षेत्र में होता है । साहित्य के माध्यम से मूल्यसंवर्धन होता है । उससे छात्र ज्ञानार्जन के साथ-साथ भाषात्मक विकास कर पाता है जिससे उसके व्यक्तित्व एवं चारित्र्य का निर्माण होता है। इस दृष्टि से प्रस्तुत पाठ्यक्रम में साहित्य की विधाओं को कक्षा-स्तर के अनुसार समाविष्ट करने की योजना है।

केंद्र सरकार के स्तर पर हिंदी शासकीय कामकाज की भाषा है । इस दृष्टि से पाठ्यक्रम में उसके व्यावहारिक रूप का समावेश भी जरूरी हो जाता है । वर्तमान युग मिडिया का है । प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मिडिया में हिंदी का काफी प्रचलन है। अत: पाठ्यक्रम में प्रयोजन मूलक हिंदी का समावेश जरूरी है । इस दृष्टि से उच्च माध्यमिक स्तर पर 'व्यावहारिक हिंदी' का विकल्प रखने की योजना है ।

वर्तमान युग की आवश्यकताएँ, छात्रों की क्षमताएँ तथा अध्यापन की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित उद्देश्य प्रस्तुत किए गए हैं ।

१) हिंदी का मानक एवं प्रभावपूर्ण प्रयोग ।

२) ज्ञानप्रसार तथा संप्रेषण तंत्रज्ञान संबंधी कौशल विकसित करना। स्वयं रोजगार के लिए आवश्यक जीवनकौशल का विकास करना ।

३) छात्रों में नैतिक, मानसिक ऊर्जा का संवर्धन करके, स्वतंत्र सोच तथा समाजविघातक शक्तियों का सामना करने की क्षमता विकसित करना । सार्वजनिक संपत्ति एवं सांस्कृतिक विरासतों के प्रति रक्षाभान निर्माण करना।

४) प्राकृतिक संसाधनों का विकास एवं उनका एक साथ उपयोग करने की क्षमता विकसित करना ।

५) भारतीय संस्कृति के बलस्थानों का परिचय देना । राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक चुनौतियों की पहचान कराना । अतीत के ज्ञान के माध्यम से वर्तमान तथा भविष्य के प्रति सचेत बनाना । समाज के दुर्बल घटकों तथा महिलाओं के सबलीकरण की आवश्यकता का महत्व बताना ।

६) छात्रों में स्वतंत्रता, न्याय, बंधुता तथा विविधता के प्रति आदरभाव निर्माण करना । विविधता में एकता, सर्वधर्मसमभाव, सामाजिक सुसंवाद तथा समता आदि मूल्यों को आत्मसात कराना ।

७) वैश्वीकरण, स्थानीयीकरण, निजीकरण तथा आधुनिकीकरण का तालमेल बिठाते हुए परस्परावलंबन की भावना का एहसास दिलाना ।

८) छात्रों में मानक हिंदी उच्चारण, संभाषण तथा लेखन आदि तत्वों का विकास करना । श्रवण, आकलन तथा मूक एवं प्रकट वाचन का कौशल विकसित करना ।

९) पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त समाचारपत्र तथा मासिक पत्रिकाओं के प्रति छात्रों की रुचि जगाना । आकाशवाणी तथा दूरदर्शन द्वारा प्रसारित हिंदी के ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों के प्रति रुचि जगाना।

अनूदित साहित्य-पठन की ओर छात्रों को प्रेरित कराना।

१०) साहित्य के माध्यम से भाषा की कलात्मक खूबियों को स्पष्ट करते हुए छात्रों में सौंदर्यबोध तथा रसास्वादन की क्षमता विकसित करना । मनोरंजन के साथ ज्ञान-संवर्धन करना।

एन.सी.ई.आर.टी. द्‌वारा पुन:सृजित पाठ्यक्रम के आधार पर महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यक्रम प्रारूप - २०१० (राज्य अभ्यासक्रम आराखडा २०१०) के अनुसार प्रथम भाषा नौवीं तथा दसवीं का पाठ्यक्रम तैयार किया गया है । पाठ्यक्रम की पुनर्रचना करते समय छात्रों की आयु, रुचि एवं बौद्‌धिक क्षमता तथा आवश्यकताओं को ध्यान में रखा गया है ।

भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में कार्यरत है। अहिंदी भाषिक क्षेत्र में प्रथम भाषा के रूप में हिंदी के पठन, लेखन एवं मौखिक संप्रेषण पर बल दिया गया है । हिंदी साहित्य के साथ अनूवादित साहित्य तथा अहिंदी भाषिक लेखकों के हिंदी साहित्य को समाविष्ट करके पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय एकात्मता की दिशा में अग्रसर किया है ।

पाठ्यक्रम के मुख्य उद्‌देश्य निम्नलिखित हैं ।

१) हिंदी तथा अन्य भाषा से अनूदित साहित्य के प्रति रुचि निर्माण करना । छात्रों में सौंदर्यबोध विकसित करना ।

२) वैज्ञानिक पाठों के माध्यम से ज्ञानसंवर्धन करते हुए छात्रों में पर्यावरण रक्षण की भावना जगाना । वैज्ञानिकों के चरित्रों के आदर्शो से परिचित कराना। श्रमप्रतिष्ठा, उद्‌यमशीलता के मूल्य जगाना।

३) प्रिंट तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हिंदी के अनुप्रयोग के प्रति सचेत कराना । समाचार पत्र, पत्रिकाओं के पठन हेतु छात्रों को प्रेरित करना ।

४) सरकारी कार्यालयों में हिंदी के व्यावहारिक उपयोग तथा प्रयोग का ज्ञान कराना ।

५) छात्रों में संभाषण कौशल का विकास करना ।

कक्षा ९ वीं

१. गद्‌य - ६४ पृष्ठ (लगभग)

अनुमानित १४ गद्‌य पाठ

कहानी ५

निबंध ४

एकांकी १

विज्ञान/पर्यावरण १

हास्य व्यंग्य २

यात्रावर्णन १

२. पद्‌य - २०० पद्‌य पंक्तियाँ (लगभग)

कविताएँ १२

मध्ययुगीन ३

आधुनिक ९

३. स्थूलवाचन (विविधा) २४ पृष्ठ (लगभग)

४. व्याकरण :

संयुक्ताक्षर, विरामचिह्नों का परिचय, शुद्‌ध प्रयोग, पदपरिचय-संज्ञासर्वनाम, विशेषण, क्रिया, लिंग, वचन, कारक, अव्यय, संधि, मुहावरे, कहावतें, दोहाचौपाई

५. रचना विभाग

निबंध - कल्पनात्मक, विचारात्मक, वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, सारांश लेखन, आकलन ।

६. प्रयोजनमूलक हिंदी

पत्र-कार्यालयीन, व्यावसायिक, कार्यक्रमपत्रिका, निवेदन,निमंत्रण, समाचारलेखन, पारिभाषिक शब्दावली।

७. संभाषन कौशल

कक्षा १० वीं

१. गद्‌य - ६४ पृष्ठ (लगभग)

अनुमानित १४ गद्‌य पाठ

कहानी ५

निबंध ४

एकांकी ४

विज्ञान/पर्यावरण १

हास्य-व्यंग्य २

यात्रावर्णन १

२. **पद्य – २०० पद्य पंक्तियाँ**

कविताएँ १२

मध्ययुगीन ३

आधुनिक ९

३. **स्थूलवाचन (विविधा) २४ पृष्ठ (लगभग)**

४. **व्याकरण**

संयुक्ताक्षर, विरामचिह्नों का परिचय, शुद्ध प्रयोग, पदपरिचय – संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, लिंग, वचन, कारक अव्यय, संधि, कहावतें मुहावरे वाक्य – उपवाक्य, छंद, वर्ण, यति, मात्रा, गण परिचय, दोहा, चौपाई, सोरठा, गीतिका।

५. **रचना विभाग**

निबंध – कल्पनात्मक, विचारात्मक, वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक,सारांश लेखन, आकलन-गद्य/पद्य

६. **प्रयोजनमूलक हिंदी**

पत्र – कार्यालयीन, व्यावसायिक, कार्यक्रमपत्रिका, निवेदन, निमंत्रण, समाचारलेखन, पारिभाषिक शब्दावली आदी।

७. **संभाषण कौशल**

◆ **महत्त्वपूर्ण : इस प्रारूप में आवश्यकतानुसार परिवर्तन करने का अधिकार 'मंडल' के 'हिंदी अध्ययन परिमंडल' को रहेगा ।**